Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 105-110

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का उद्‌भव और विकास

महेन्द्र जाखड़
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

आधुनिकता मनुष्य के द्वारा अपने जीवन में विकासोन्मुख होने की प्रक्रिया का नाम है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। अपनी प्रकृति में जड़ तथा स्थिर मान्यताएँ एवं विश्वास, समय और काल के परिवर्तन के साथ ही अप्रासंगिक हो जाते हैं। इस समूचे प्राणिजगत में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा जीव है, जिसको विवेकशील समझा जाता है। उसे दैनिक जीवन में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए उसे वर्तमान स्थितियों में बदलाव की प्रेरणा मिलती है। उसकी यहीं महत्त्वाकांक्षा तथा स्व के प्रति जागरूकता ही उसे तर्क, विवेक एवं विचार के द्वारा अपने जीवन में आधुनिक बनने की ओर अग्रसर करती है। आधुनिकता मध्यकालीन बोध की परंपराओं एवं रूढ़ियों से तर्कबुद्धि, विवेक आदि के द्वारा विकसित समाज की और जाने की प्रक्रिया है। इस आलेख के द्वारा आधुनिकता, आधुनिकीकरण एवं आधुनिकतावाद की मूल अवधारणा से परिचित हो सकेंगे। हिन्दी साहित्य में आधुनिकता बोध के उदय एवं विकास को समझ सकेंगे। मध्यकालीन दौर के उपरांत जनता की चितवृत्तियों में सकारात्मक परिवर्तन आधुनिकता के विकास की प्रक्रिया में अहम माना जा सकता है। आधुनिकता सिर्फ साहित्यिक अवधारणा न होकर अन्य ज्ञानानुशासनों से गुजर कर साहित्य में आई है। हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का उदय भारतेन्दु युग से माना जाता है। आधुनिकता ने मानव जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया है। इसने हमारे परम्पराओं से पोषित समाज को नई ऊर्जा प्रदान की है।

संकेताक्षर—*आधुनिकता बोध, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, एकाकीपन, मध्यकालीन बोध*

प्रस्तावना

'आधुनिक' शब्द से ही 'आधुनिकता' बना है आधुनिक शब्द की उत्पत्ति 'अधुना' शब्द में 'इक' प्रत्यय से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ है—तुरन्त, इसी क्षण, अत्यन्त नूतन। आधुनिक वर्तमान का भी अर्थद्योतक है। आधुनिक शब्द समय सूचक है जिससे आज या सामयिक का बोध होता है। 'आधुनिक' में 'ता' प्रत्यय जुड़ने से आधुनिकता बना है। अंग्रेजी में आधुनिक के लिए Modern एवं आधुनिकता के लिए Modernity शब्द है। जिसका अर्थ है "आधुनिक होने या दिखने की अवस्था या गुण। अथवा आधुनिक युग या दुनिया और विशेष रूप से आधुनिक दुनिया से जुड़े विचार और दृष्टिकोण।"[1] आधुनिक होने या दिखने से आशय है समकालीन सामाजिक प्रवृत्तियों से स्वयं को जोड़ना। आधुनिकता बोध कालबोधक न होकर मध्यकालीन बोध से अलग एक नवीन मानसिकता है। वर्तमान व्यवस्था के प्रति यथार्थपरक विचार दृष्टि रखना भी आधुनिकता है। आधुनिकता में प्राचीन अर्थहीन परंपराओं एवं अंधविश्वासों को मान्यता नहीं दी जाती। यह तो समय सापेक्ष होती है जिसमें नवीन आदर्शों एवं आधुनिक जीवनशैली को प्रमुखता दी जाती है।

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता बोध की अवधारणा

वर्तमान में नगरीकरण, मनुष्य का यांत्रिक जीवन, पश्चिमी सभ्यता के अनुकरण ने मनुष्य के जीवन में एक नई हलचल

पैदा की है। उपभोक्तावादी संस्कृति के परिणामस्वरूप आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद भी मनुष्य की मनोकामनाएँ अधूरी ही हैं ये अतृप्त मनोकामनाएँ मानवीय कुंठा का कारण बनती है जिसके कारण सब संसाधन होते हुए भी मनुष्य अभावग्रस्त महसूस करता है। इस प्रकार आधुनिकता एक विशेष प्रकार की जीवन शैली है। जहाँ प्रत्येक मनुष्य अपने स्तर पर बहुविध समस्याओं से जूझता दिखाई देता है। वह एक रोबोट मशीन की तरह बाह्य दुनिया से बेखबर अपनी ही दौड़ में लगा रहता है। रात-दिन की इस भागदौड़ में भी उसे चैन नहीं मिलता। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतियोगिता करता दिखाई देता है। भीड़ में भी वह अपने आपको अकेला महसूस करता है। जिससे उसके मन में एकाकीपन एवं असंतोष की भावना उत्पन्न हो जाती है तथा उसका जीवन से मोह भंग हो जाता है। एकाकीपन, असंतोष, प्रतियोगिता की भावना, जीवन से मोह भंग आदि मनुष्य की मनःस्थिति आधुनिकता के ही लक्षण हैं। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में नवीन चेतना एवं विभिन्न सामाजिक विमर्शों का महत्वपूर्ण स्थान है।

वर्तमान युग की एक महत्वपूर्ण विशेषता आधुनिकता बोध है। इस युग में तकनीकी विकास, विज्ञान की उन्नति, यांत्रिक सभ्यता एवं नई संवेदना के कारण बीसवीं सदी के सातवें दशक में आधुनिकता बोध को प्रमुखता से महसूस किया जाने लगा। वर्तमान में विज्ञान की अभूतपूर्व उन्नति मानव जाति के लिए वरदान साबित हुई है। इससे मनुष्य का काम आसान हो गया। मानव जीवन की समस्याओं को सुगमता से हल किया जाने लगा। विभिन्न प्रकार की मान्यताएँ एवं विश्वास मिथ्या साबित हुए। वैज्ञानिक प्रगति के फलस्वरूप मनुष्य दैनिक जीवन में तर्कशील चिंतन को महत्व देने लगा। बिना तर्क के वह किसी भी विश्वास, मान्यताओं आदि को मानने को तत्पर नहीं होता। विज्ञान की उन्नति ने एक तरफ मनुष्य के जीवन को काफी आसान बना दिया है, तो दूसरी तरफ मानवीय अस्तित्व के सम्मुख चुनौतियाँ भी पेश की है। आज मानव जाति विज्ञान के कई आविष्कारों से सशंकित है। वैज्ञानिक आविष्कारों के साथ नैतिकता के अभाव ने मानवीय अस्तित्व पर संकट खड़ा कर दिया है।

वैज्ञानिक उन्नति एवं औद्योगीकरण के विकास के फलस्वरूप मानवीय जीवन में परिवर्तन आता जा रहा है। वर्तमान में शहरी जीवन की जटिलता एवं मनुष्य की तनाव भरी जिंदगी का प्रभाव उसके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल रूप में पड़ा है। जिससे मनुष्य को एकाकीपन, अवसाद, ईश्वरीय सत्ता के प्रति अविश्वास, जीवन की निस्सारता, निराशावादी प्रवृत्ति आदि मनोस्थितियों का सामना करना पड़ा।

आधुनिकता मनुष्य की नई मानसिक स्थिति है जो उसे प्राचीनता एवं मध्यकालीनता की जड़ एवं अप्रासंगिक हो चुकी रूढ़ियों, परंपराओं से अलग करती है, तथा समाज एवं देश के उत्थान के लिए नये विचार एवं दृष्टिकोण प्रदान करती है। आधुनिकता परंपरा का एकदम से विरोध नहीं है। ऐसे मूल्य, विश्वास एवं परंपराएँ जो वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं वह भी आधुनिकता में शामिल हैं। यहाँ अंधविश्वासों, बाह्यडम्बरों एवं अपनी अर्थवत्ता खो चुकी रूढ़ियों के लिए कोई स्थान नहीं है। आधुनिकता औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं बौद्धिकता से संबद्ध है। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप शहरों के आस-पास बड़ी संख्या में उद्योग-धंधे स्थापित किए गए। उद्योगों के विकास के साथ ही श्रमिक वर्ग का पलायन शहरों की और होने लगा, जिससे नगरों का विस्तार होता गया। नगरीकरण भी आधुनिकता बोध के लिए प्रमुख कारक है। डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार— "आधुनिक", वैज्ञानिक आविष्कारों और औद्योगीकरण का परिणाम है जबकि 'आधुनिकता' औद्योगीकरण की अतिशयता, महानगरीय एकरसता, दो महायुद्धों की विभीषिका का फल है। वस्तुतः नवीन ज्ञान-विज्ञान, टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न विषम मानवीय स्थितियों के नये, गैर-रोमैंटिक और अमिथकीय साक्षात्कार का नाम 'आधुनिकता' है।"[2] आधुनिकता औद्योगीकरण की अतिशयता के साथ ही महानगरीय सभ्यता तथा दो महायुद्धों के फलस्वरूप उत्पन्न एक नई जीवन दृष्टि है।

साहित्य के आधुनिक काल में युग प्रवृत्तियों में तेजी से परिवर्तन देखने को मिला है। किसी एक काल की साहित्यिक धारा कुछ ही समय में दूसरी साहित्यिक धारा में परिणत होते देखी जा सकती है। आधुनिक काल की शुरूआत से लेकर हिन्दी साहित्य में लगभग 20-25 वर्षों के कई युग समाप्त हो चुके हैं—भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता आदि। इनकी अवधि उतरोत्तर छोटी होती जा रही है। यह तीव्र विकास की गति अनायास नहीं है बल्कि इसके पीछे मनुष्य की आत्म चेतना है। "आधुनिकता की पहली और अनिवार्य शर्त स्वचेतनता है। इसके लिए साक्ष्य कई क्षेत्रों से प्रस्तुत किये जा सकते हैं। स्वयं इतिहास यदि लिया

जाय तो काल-विभाजन की तुलनात्मक विवेचना से स्पष्ट हो सकेगा कि इतिहास के काल, समय की अवधि की दृष्टि से, धीरे-धीरे छोटे होते जा रहे हैं। युग प्रवृत्तियों का इतना शीघ्र परिवर्तन और उसका इतना शीघ्र अनुभावन गहरी स्वचेतनता द्वारा ही सम्भव है।"[3]

आधुनिक काल में ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी का विकास तीव्र गति से हुआ। आज मनुष्य ने विज्ञान और तकनीकी में बहुत विकास कर लिया है। अब तकनीकी के बिना रह पाना नामुमकिन हो गया है। इसने हमारे जीवन को सरल और सुविधाजनक बना दिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने लोगों के जीवन को बड़ स्तर पर प्रभावित किया है। विज्ञान एवं तकनीकी की उन्नति ने मनुष्य को बैलगाड़ी की सवारी से वर्तमान में हवाई जहाज तक पहुँचा दिया है। यह आधुनिकता का ही परिणाम है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार—"आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न मानवीय स्थितियों का नया ग़ैर-रोमेंटिक और अमिथकीय साक्षात्कार आधुनिकता है।"[4] इस प्रकार वर्तमान में विज्ञान एवं तकनीकी की उन्नति के फलस्वरूप मानवीय व्यवहार में आया परिवर्तन ही आधुनिकता है।

आधुनिकता कोई शाश्वत सिद्धान्त नहीं है यह तो एक प्रक्रिया है। जहाँ प्राचीन मान्यताओं के स्थान पर नवीन मान्यताओं को स्थान दिया गया है। मृत रूढ़ियों, अंधविश्वास, समय के साथ अप्रासंगिक हो चुकी परंपराओं का अतिक्रमण कर आधुनिकता नवीन प्रवृत्तियों की स्थापना करती है। इस संबंध में रामधारी सिंह दिनकर का मानना है—"जिसे हम आधुनिकता कहते हैं, वह एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अंधविश्वास से निकलने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप पर पहुँचने की प्रक्रिया है।"[5] इस प्रकार आधुनिकता धर्म की विकृतियों को दूर कर धर्म के सही रूप की स्थापना भी करती है। यह बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया भी है शिक्षा के द्वारा समाज व राष्ट्र की उन्नति की प्रक्रिया है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यहाँ नित नई प्रवृतियाँ देखने को मिलती है। अवांछित चीजों के लिए कोई स्थान नहीं है। गत्यात्मकता की स्थिति की प्रकृति को मोहक एवं आकर्षक बनाती है। इसी गतिशील स्थिति के कारण प्राचीनता की नींव पर आधुनिकता का महल खड़ा हुआ है। डॉ. नरेन्द्र मोहन के अनुसार—"आधुनिकता कोई निरपेक्ष धारणा या निरंकुश सिद्धांत नहीं है। यह गतिशील आधुनिक स्थिति है। जिसका स्वभाव ठहरना नहीं, निरन्तर बदलना है। काल धारणा से मुक्त यह कोई सनातन क्रिया नहीं, आधुनिक युग की गतिशील प्रक्रिया है। आधुनिकता इसी प्रक्रिया से बनी मानसिकता है।"[6]

आधुनिकतावाद

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक चेतना एक प्रमुख तत्व है इस तत्व की समीक्षा आधुनिकतावाद करता है। 'आधुनिकतावाद' अंग्रेजी शब्द 'Modernism' का हिन्दी पर्याय है जिसका अर्थ है आधुनिक विचार, अभिव्यक्ति एवं शैली की गुणवत्ता। आधुनिकतावाद एक यूरोपीय अवधारणा है। यूरोप में आधुनिकतावादी आंदोलन का विकास बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हुए विश्वयुद्धों की पृष्ठभूमि में हुआ माना जाता है। यह एक सांस्कृतिक आंदोलन था। वर्तमान में प्रचलित विकिपीडिया के अनुसार "आधुनिकतावाद अपनी व्यापक परिभाषा में, आधुनिक सोच, चरित्र या प्रथा है। विशेष रूप से यह शब्द उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी के आरंभ में मूल रूप से पश्चिमी समाज में व्यापक पैमाने पर और सुदूर परिवर्तनों से उत्पन्न होने वाली सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के एक समूह एवं संबद्ध सांस्कृतिक आंदोलनों की एक सरणी दोनों का वर्णन करता है।"

इस प्रकार 'आधुनिकतावाद' लोगों के दैनिक जीवन की गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को समाहित करता है। पश्चिमी साहित्य में आधुनिकतावाद का उदय स्वच्छन्दतावाद के प्रतिक्रियास्वरूप हुआ। दो विश्वयुद्धों के परिणामस्वरूप स्वच्छन्दतावादी काव्य संवेदनाओं एवं नैतिकता का संसार निरर्थक महसूस किया जाने लगा। पहले जहाँ कवि बाह्य प्रकृति के द्वारा स्वयं को अभिव्यक्त करता था। वहाँ अब वह बाह्य संसार की बजाय स्वयं के भीतर की संवेदनाओं को व्यक्त करना महत्वपूर्ण समझता है। इस प्रकार अन्तर्मन की यह अभिव्यक्ति मानवीय संवेदना के स्तर पर आए बदलाव को इंगित करती है। स्वच्छन्दतावाद की रोमेंटिक भावुकता के स्थान पर आधुनिकतावाद में आधुनिक किस्म की संवेदनशीलता देखने को मिलती है। इसीलिए आधुनिकतावाद को गैर-रोमानी भाव-बोध भी कहा जाता है। यहाँ स्वच्छन्दतावाद की प्रेमपरक कोमल अनुभूति की जगह यथार्थ जीवन की कठोर अनुभूतियाँ हैं। डॉ. इन्द्रनाथ मदान के अनुसार—"आधुनिकता को जब मूल्यों के साँचे में ढाला गया है तो इसका परिणाम आधुनिकतावाद में

निकलता रहा है जो संकुलता की स्थिति को पैदा करता है, पहले दौर की कसौटी पर दूसरे दौर की आधुनिकता को परखा जाता रहा है और इसमें रोमांटिक बोध को पाया जाता रहा है।"

आधुनिकतावाद को कला के क्षेत्र में हुए विभिन्न आन्दोलनों (प्रतीकवाद, बिम्बवाद, रूसी रूपवाद, प्रभाववाद, अतियथार्थवाद आदि) का समूह माना जाता है। इनमें से कई एक-दूसरे के विरोधी भी थे लेकिन इनमें परस्पर सामंजस्य था। यहाँ अभिव्यक्ति को ही महत्वपूर्ण मान लिया गया था। अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने के लिए शैली में नए प्रयोग किए गए। बिम्बवाद के द्वारा नए-नए बिम्बों एवं प्रतीकों का जन्म हुआ। जिससे कवि अपनी अभिव्यक्ति बिम्बों एवं प्रतीकों के माध्यम से प्रभावी रूप से करने लगे। प्रभाववादियों ने अनावश्यक तत्वों को छोड़कर सार तत्व के अंकन पर बल दिया। अतियथार्थवादियों ने प्रयोगधर्मिता का सहारा लिया। ये सारे आन्दोलन परम्परा से मुक्ति पाने के क्रम में थे। इन सब में रूप एवं शैली को ही प्रमुखता प्राप्त थी। आधुनिकतावादी आन्दोलन ने कला, दर्शन एवं सामाजिक संगठन के नए रूपों के निर्माण की इच्छा को दर्शाया। जिससे नगरीकरण, नए वैज्ञानिक आविष्कार, उभरती हुई औद्योगिक दुनिया एवं युद्ध की संवेदना आदि को प्रतिबिंबित किया गया। कला के पारंपरिक एवं अप्रचलित रूपों के स्थान पर नवीन रूप सामने आए। पश्चिमी लेखक एजरा पाउण्ड आधुनिक कविता के बुनियादी लेखकों में से एक हैं उन्हें बिम्बवाद के प्रवर्तन का श्रेय दिया जाता है। एजरा पाउण्ड ने सन् 1912 में लन्दन में 'जेण्टिल पोएट्री' की प्रतिक्रियास्वरूप 'इमेजिज्म' (बिम्बवाद) का प्रवर्तन किया। उन्होनें विकल्प के तौर पर कविता के स्वरूप में बदलाव के लिए कुछ सुझाव दिए—ऐसा अनावश्यक शब्द प्रयोग जो प्रस्तुतीकरण में कुछ न जोड़ता हो, से बचना चाहिए। बिम्ब को अस्पष्ट करने वाली अभिव्यक्तियों से बचना चाहिए। कविता में इतिवृत्तात्मक वर्णन से बचना चाहिए।

इस प्रकार एजरा पाउण्ड कविता में स्पष्ट अभिव्यक्ति वाले दृश्यात्मक बिम्बों पर जोर देते थे। पश्चिमी विचारक टी.एस. इलियट (1888-1965) को आधुनिकतावाद के प्रमुख सिद्धान्तकार के तौर पर जाना जाता है। इलियट के काव्य संबंधी विचार उनकी कृति 'द वेस्ट लैण्ड' (1922) में रूपायित होते देखे जा सकते हैं। इन्होंने आधुनिकता को परम्परा एवं परम्परा को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में देखने की जिज्ञासा उत्पन्न की।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का अवलोकन करने पर देखने में आता है कि आधुनिकतावाद के नाम से कोई भी साहित्यिक आन्दोलन हिन्दी साहित्य में नहीं चला। सन् 1936 तक आधुनिकता के विकास में हिन्दी साहित्य में भारतीय दर्शन, मतवाद एवं विचारधारा का प्रभाव है लेकिन छायावाद के बाद यहाँ यूरोपीय साहित्य का प्रभाव बढ़ता दिखाई देता है। छायावाद को भी पश्चिमी साहित्य की तर्ज पर माना जाता रहा है। प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के बाद हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी रूझान देखा जा सकता है। मार्क्सवादी आलोचना की मजबूत स्थिति से हिन्दी साहित्य में आधुनिकता से संबंधित समझ भी प्रभावित हुई।

हिन्दी साहित्य में आधुनिकतावादी विचारों की शुरूआत 'तारसप्तक' (1943) से मानी जाती है। जिसके संपादक 'अज्ञेय' थे। इसके द्वारा नये शिल्प एवं संवेदना को बढ़ावा देकर इसे आधुनिकतावादी विचारधारा के रूप में प्रचारित किया गया। पश्चिमी साहित्य में स्वच्छन्दतावाद के प्रतिक्रिया स्वरूप आधुनिकतावाद को देखा जाता है। हिन्दी साहित्य में छायावाद को स्वच्छन्दतावाद की तर्ज पर देखा गया। छायावाद की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रगतिवाद व प्रयोगवाद आए, जिनमें आधुनिकतावाद की विशेषताएँ देखी जा सकती है। डॉ. बच्चन सिंह का मानना है—"आधुनिकतावादी अन्तर्यात्रा करता है, मूल्यों का मखौल उड़ाता है, वह विद्रोही होता है। भीड़ का विरोध करता है, वह व्यक्ति की मुक्ति का विश्वासी है। वह अपने को अ-मानव की स्थिति में पाता है, और स्नेह, कृतज्ञता आदि को निष्कासित कर देता है। संयम की कमी, प्रयोग, साहित्य रूपों की तोड़-फोड़, शॉक देने की मनोवृत्ति, आक्रोश-क्षोभ-हिंसा की आकांक्षा आदि इसकी विशेषताएँ या 'मोटिफ' हैं।"[7]

आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है जिसका आशय है विज्ञान एवं तकनीक पर आधारित समाज में परिवर्तन आना। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया शैक्षिक विकास पर आधारित है। शिक्षा के प्रसार के साथ समाज में विभिन्न परिवर्तन देखने को मिले। जो औद्योगिक एवं आर्थिक विकास की गतिविधियाँ भौतिक रूप में हमारे सामने है यहीं आधुनिकीकरण है। 'रामधारी सिंह दिनकर' के शब्दों में "आधुनिकीकरण की पहचान है समाज का सुदृढ़ और प्रभावकारी होना, राजनीतिक

स्थायित्व, उचित सफाई, स्वच्छ जल, बिजली की लगातार सप्लाई, जनसंख्या पर नियंत्रण, शिक्षा के स्तर का ऊँचा होना तथा ट्रेनिंग और एक्सपर्टाइज।"[8] इस प्रकार आधुनिकीकरण की अवस्था में सुदृढ़ सामाजिक संगठन, विकसित एवं प्रभावी प्रशासन की संरचना, राजनीतिक स्थिरता का होना आवश्यक है। आधारभूत सुविधाओं (बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन के साधन) का स्तर भी उन्नत होता है, साथ ही जनसंख्या पर प्रभावी नियंत्रण एवं मानव संसाधन का उचित नियोजन भी आवश्यक होता है।

आधुनिकीकरण एक गतिशील प्रक्रिया है जो परम्परागत समाज को आधुनिक समाज में परिवर्तित करती है। इसके द्वारा देश को उन्नत, विकासवान एवं आधुनिक बनाया जाता है। एक देश के भौतिक संसाधनों की उन्नति के साथ ही उसके जीवन शैली, मूल्य व्यवस्था और विश्वासों में परिवर्तन ही आधुनिकीकरण है। आधुनिकीकरण से प्रत्येक का आशय अलग-अलग है। एक अनपढ़ आदमी के लिए सुख-सुविधाओं का उपभोग ही आधुनिकीकरण है। उसके लिए औद्योगिकीकरण ही आधुनिकीकरण है। एक अर्थशास्त्री के लिए यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे किसी नई तकनीक के द्वारा उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग किया जा सके। एक इतिहासकार की दृष्टि में यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति नवीन ज्ञान की प्राप्ति करता है तथा उसके आधार पर वह अपनी जीवन-शैली तथा सोच को बदलता है। इस प्रकार सभी के लिए आधुनिकीकरण के अलग मायने हैं। कुछ लोग पाश्चात्यीकरण को ही आधुनिकीकरण मानते हैं। पाश्चात्यीकरण से आशय पश्चिमी सभ्यता की जीवन-शैली को अपनाने से है। इस प्रक्रिया से जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का परिवर्तन आ सकता है। परंतु आधुनिकीकरण प्रायः सकारात्मक ही होता है। पिछड़े राष्ट्रों के द्वारा देश-विदेश की उन्नत वैज्ञानिक खोजों, तकनीकी एवं प्रबन्धन की तकनीक को अपनाकर अपने मानव संसाधन को प्रशिक्षित किया जाता है, उनकी कार्यक्षमता बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाया जाता है जिससे देश का आर्थिक विकास होता है।

इस प्रकार आर्थिक विकास के द्वारा लोगों के जीवन स्तर को उन्नत किया जाता है। जीवन स्तर ऊँचा उठाना ही आधुनिकीकरण की आवश्यक शर्त है। हिन्दी साहित्य में आधुनिक बोध का संक्रमण भारतेन्दु काल (1868-1900 ई.) से माना जाता है। इस युग के प्रणेता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने गद्य एवं पद्य में नयी चेतना का सूत्रपात किया। उन्होंने युगीन परिस्थितियों को प्रभावी रूप में अभिव्यक्त किया। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का सूत्रपात राष्ट्रीय भाव-बोध के उदय से माना है। भारतेन्दु युग के लेखक भी देश की दुर्दशा से व्यथित थे। इसलिए उन्होंने देश के लोगों में राष्ट्रीयता की मनःस्थिति को जगाने का प्रयत्न अपनी रचनाओं के माध्यम से किया। जिससे देशवासियों में देशभक्ति का भाव पैदा हो। "हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु से लेकर मैथिलीशरण गुप्त और फिर छायावाद तक राष्ट्रीय भाव बोध के कई स्तर हैं। मैथिलीशरण गुप्त और उनके सहयोगी कवियों में पहले तो राष्ट्रीयता का भाव इतिवृत्त-प्रधान और मुखर होता है; फिर छायावाद में उसका स्वरूप सूक्ष्म और सांस्कृतिक चेतना प्रधान हो जाता है।"[9]

इस प्रकार हिन्दी साहित्य में आधुनिकता की शुरूआत भारतेन्दु युग में ही हो चुकी थी। भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य को गतिशीलता की स्थिति में लाने का काम किया। उनकी इसी युगान्तरकारी भूमिका में उनकी आधुनिकता निहित है। भारतेन्दु युग में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव भी दिखने लगा था। व्यक्ति और समाज के स्तर पर राजभक्ति एवं देशभक्ति का द्वन्द्व व्याप्त था। आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति प्रायः राजभक्ति की और उन्मुख थे, तो दूसरी तरफ अंग्रेजी राज को देश की उन्नति में बाधक मानने वाले देशभक्त भी थे।

भारतेन्दु ने निज भाषा की उन्नति पर विशेष बल दिया था। उसको व्यावहारिक स्तर पर मूर्त रूप महावीरप्रसाद द्विवेद्वी के द्वारा दिया गया। द्विवेदी जी ने गद्य व पद्य की भाषा एक करने के साथ भाषा परिष्कार पर भी कार्य किया। भाषा संबंधी कार्यों के अलावा इन्होंने आर्थिक शोषण की प्रक्रिया को तथ्यों व आँकड़ों के द्वारा सामने लाने का काम किया। आधुनिकता के साथ समकालीनता का भाव भी जुड़ा होता है। समकालीनता के बिना आधुनिक नहीं हुआ जा सकता है। द्विवेदी जी के यहाँ समकालीनता का भाव एक प्रमुख प्रवृत्ति है, जो राष्ट्रीय सरोकारों से जुड़ी हुई है। आचार्य शुक्ल ने आधुनिकता को एक विदेशी प्रभाव मानकर उसे हमारे सच्चे साहित्य को धूमिल करने वाला माना है। वे इस आयातित विचारधारा के अन्धानुकरण के विरोध में थे। हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के आरम्भिक चरण की शुरूआत भारतेन्दु की देशोन्नति और स्वत्व गठन की

चिन्ता से हुआ था। वहीं स्वराज्य की माँग तक पहुँच गया। स्वराज्य की माँग में आत्मनिर्णय के अधिकार की आकांक्षा थी, तो भारतेन्दु युग की देशोन्नति की माँग में अंग्रेजी राज के प्रति आस्था भी थी। इसलिए स्वराज्य की माँग व्यक्ति के राजनीतिक विकास की सूचक थी। यहाँ मुक्ति की मानसिकता दिखाई देती है, जो आधुनिकता की परिचायक है। लेकिन रचनात्मक स्तर पर हिन्दी साहित्य में आधुनिकता की शुरूआत बीसवीं सदी के चौथे दशक से मानी जा सकती है। "आधुनिकता का बोध नगर-बोध से भी जुड़ा हुआ है; इसलिए इसकी प्रक्रिया को नगरीकरण की प्रक्रिया से जोड़ा जाता है। आधुनिकता कभी धारणा के स्तर पर है तो कभी संवेदना के स्तर पर। इसी तरह आधुनिकता के बोध को चिन्तन के किसी एक बाड़े में सीमित करना भी असंगत जान पड़ता है।"[10] आधुनिकता के बोध का एक प्रमुख कारण नगरीकरण का तीव्र विस्तार भी माना जा सकता है। आधुनिकता का बोध कभी धारणा के स्तर पर तो कभी इसको संवेदनात्मक स्तर से जोड़कर भी देखा जाता है।

निष्कर्ष

आधुनिकता का बोध साहित्य में मध्यकालीन बोध की प्रतिक्रिया स्वरूप आया। इसके अन्तर्गत वे प्राचीन मान्यताएँ, विश्वास, रूढ़ियाँ आदि जो मनुष्य के स्वच्छन्द सामाजिक विकास में अवरोध का कार्य करती थी। उन्हें नकार कर ऐसी व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया गया, जो मनुष्य को विभिन्न प्रकार के बंधनों से छुटकारा दिलाने तथा उसके स्वाभाविक विकास को पुष्ट करने वाली थी। इसी प्रक्रिया को आधुनिकता के नाम से जाना जाने लगा। हिन्दी साहित्य में आधुनिकता की शुरूआत भारतेन्दु युग से मानी जा सकती है। जब साहित्य को जनसरोकारों से जोड़ा जाने लगा। लेकिन हिन्दी गद्य के आगमन से इस प्रक्रिया में तेजी से बदलाव देखने को मिले। रचनात्मक स्तर पर हिन्दी में आधुनिकता का आगमन बीसवीं सदी के चौथे दशक से माना जाता है। इस समय हिन्दी में प्रगतिशील रचनायें अत्यधिक मात्रा में देखने को मिलती है जो आमजन के अधिकारों की बात को अधिक प्रभावपूर्ण रूप से अभिव्यक्त करती है। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से तो हिन्दी साहित्य में विभिन्न नवीन विषयों की अभिव्यक्ति की जाने लगी। रचनाकारों की यथार्थोन्मुख दृष्टि ने समाज के उपेक्षित वर्गों, मानव जीवन के नवीन प्रसंगों की प्रबल अभिव्यक्ति से आधुनिकता की प्रक्रिया को गति दी।

संदर्भ सूची

1. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट मेरीवेबस्टर.कॉम
2. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ.सं. 38
3. वर्मा, धीरेन्द्र, हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 2021, पृ.सं. 86
4. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2018, पृ.सं. 416
5. दिनकर, रामधारी सिंह, साहित्यमुखी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2019, पृ.सं. 198
6. मोहन, डॉ. नरेन्द्र, आधनिकता और समकालीन रचना-संदर्भ, आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1973, पृ.सं. 11
7. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ.सं. 38
8. दिनकर, रामधारी सिंह, आधुनिकता बोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2019, पृ.सं. 91
9. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, आधुनिक कविता-यात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2022, पृ.सं. 101
10. मदान, इन्द्रनाथ, आधुनिकता और हिन्दी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पृ.सं. 27